शिक्षा का भारतीय प्रतिमान: पुनरुथान विद्यापीठ

डो. रणजीतसिंह पवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री सी. एच.शाह मैत्री विद्यापीठ महिला कोलेज ऑफ़ एज्युकेशन, मानव मंदिर, सुरेंद्रनगर

१. प्रास्ताविक

भारत की सभी समस्याओं का मूल भारत में चल रही पाश्चात्य शिक्षा है। सब यह जानते हुए भी उसका विकल्प देने में असफल रहे। दयानंद सरस्वती, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गांधीजी आदि ने प्रयास किए। उनके प्रयास असफल रहे एसा तो नहीं कह सकते परन्तु व्यापक प्रमाण में स्वीकृत होने से पहले ही अपनी पहचान खोने लगे। अब गुजरात में यह कार्य पुरुत्थान विद्यापीठ कर रही है। व्यास पूर्णिमा २००४ से डो. धर्मपाल जी के पुस्तकों के प्रकाशन से यह कार्य शुरू हुआ। व्यास पूर्णिमा २०१२ को इस कार्यको 'पुरुत्थान विद्यापीठ' नाम दिया गया।

"भारतमाता एक बार मुक्त हुई है, परंतु उसे (सर्वार्थ में) दूसरी बार मुक्त करने की आवश्यकता है। यह दूसरी मुक्ती भी होगी शिक्षा के माध्यम से"

पुरुत्थान विद्यापीठ शिक्षा का भारतीयकरण करने का प्रयत्न कर रही है। पश्चिमीकरण से भारतीय शिक्षा की मुक्ति तथा भारतीय शिक्षा की पुन: प्रतिष्ठा कर भारत का पुनरुत्थान करना इसका मुख्य उद्धेश्य है।

मार्गदर्शक मंडल:- विद्यापीठ के चार मार्गदर्शक हैं ।

१.मा. बजरंगलालजी गुप्त, दिल्ली

२.मा. श्रीकृष्ण माहेश्वरी, सतना

३.मा. अनिरुद्ध देशपांडे,पुणे

४.मा. हरिभाऊ वझे, मैसूर

कुलपति:- मा. इंदुमति काटदरे, कर्णावती

आचार्य परिषद्: शैक्षणिक योजना बनाने और निर्वहण करने के लिए ११ नियुक्त और ३ आमंत्रित सदस्यों की आचार्य परिषद् बनाई गई है।

परामर्शन मंडल:सात सदस्यों का यह मंडल अपने ज्ञान से विद्यापीठ को मार्गदर्शन देता।

विद्यापीठ के केंद्र और केंद्रसंयोजक: विद्यापीठ का कार्य देश व्यापी बने इस हेतु देश में १६ संयोजन केंद्र बनाए गए।

विद्यापीठ परिषद्:- इन केन्द्रों के उपरांत विद्यापीठ के कार्यकर्त्ता और शुभेच्छक इस परिषद् के सदस्य हैं। प्रतिवर्ष व्यासपूर्णिमा के दिन यह परिषद् मिलती हैं और विविध विषयों और कार्ययोजना की चर्चा होती हैं।

केन्द्रीय कार्यालय: 'ज्ञानम' ९/बी, आनंदपार्क, जूनाढोर बाजार, कांकरिया रोड, अमदावाद-३८०००२८ दूरभाष: (०७९) २५३२२६५५ विपुल रावल ०९९७९० ९९१४२ पराग बबरिया ०९४२७२ ३७७१९

Email- punvidya2012@gmail.com, info@punrutthan.org web: www.punarutthan.org

२. शिक्षा का शुद्ध भारतीय स्वरुप

वर्तमान में देश के सभी विश्वविद्यालय लन्दन यूनिवर्सिटी की पद्धति से चल रहे है। स्थापना, प्रवेश, भवन नीतिनियम सब कुछ लन्दन यूनिवर्सिटी के अनुसार ही होते है। यह विद्यापीठ शुद्ध भारतीय स्वरुप का प्रथम विद्यापीठ है।

३. आधारभूत सूत्र

१.विद्यापीठ पूर्णत: स्वायत है अर्थात न सरकारी मान्यता है न ही सरकारी नियंत्रण है। नोकरी व सर्टिफिकेट के लिए नहीं परन्तु ज्ञान अर्जन करने के लिए शिक्षक और छात्र प्रवेश करते हैं।

२.शुद्ध भारतीय ज्ञानधारा के विषय देशानुकुल व युगानुकुल रूप से पढ़ाये जा रहे है।
३.सम्पूर्ण रूप से नि:शुल्क है। समाज पोषित अर्थ व्यवस्था है ।

४. कार्य

- विद्वद परिषद् की रचना:- भारतीय शिक्षा के १०१ विद्वान् व्यक्तियों की एक परिषद् बनाई गई है। जो अध्ययन, शोध और मार्गदर्शन का कार्य करते है।
- ग्रंथ निर्माण:-शुद्ध भारतीय ज्ञानधारा के आधुनिक और अर्वाचीन ग्रंथों का एक उतम ग्रंथालय का निर्माण किया जा रहा है।
- शोध प्रकल्प:- शोधकर्ताओं के लिए शुद्ध भारतीय क्षेत्रों और विषयों की सूचि बनाना और उन्हें इस कार्य के लिए प्रोत्साहित करना।
- चिति शोध पत्रिका:- विशुद्ध भारतीय ज्ञानविषयक लेखो प्रकाशित करने के लिए छ: मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।
- पुनरुत्थान संदेश:- पुरुत्थान विचार और कार्यक्रम प्रतिमाह पुरुत्थान सन्देश पत्रिका के माध्यम से (हिंदी और गुजराती माध्यम) प्रकाशित किये जाते हैं ।
- ज्ञानसाधना वर्ग:- भारतीय ज्ञानसाधना को पुनर्प्रवाहित करनेवाले ज्ञानसाधकों को तैयार करने के लिए ३, ५, और ७ दिन के ज्ञानसाधना वर्ग किये जाते हैं । इन वर्गों के चार क्षेत्र है १. श्रीमद्भागवत गीता, २. एकात्म मानवदर्शन, ३. भारतीय शिक्षा के मूलतत्व और ४. समग्र विकास प्रतिमान।
- राष्ट्रीय विद्वत गोष्ठी:- भारत के विविध विषयों के विद्वानों को एक मंच पर लाकर उनको अपने विषयों को भारतीय संदर्भ चिंतन मनन हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है । चिति शोध पत्रिका में इन विषयों को प्रकाशित किया जाता हैं ।
- प्रशिक्षण वर्ग:- देश में प्रचलित शिक्षा के पाश्चात्य मॉडल के स्थान पर शुद्ध भारतीय 'समग्र विकास प्रतिमान' को प्रस्थापित करने हेतु आचार्यों को प्रशिक्षित किया जाता हैं ।
- वरवधु चयन और विवाह संस्कार वर्ग:- परिवार शिक्षण के अंतर्गत प्रत्येक तरुण-तरुणी अच्छे गृहस्थ बने इस हेतु प्रशिक्षण वर्ग चलाये जाते हैं ।
- स्थापना दिनोत्सव:- प्रति वर्ष व्यासपुर्णिमा को संस्था का स्थापना दिन मनाया जाता है। पुनरुथान के सभी कार्यकर्ता इस दिन भगवान वेदव्यासजी की पूजा कर समर्पण करते हैं और ज्ञानधारा की प्रतिष्ठा के लिए अपने संकल्प को दृढ करते हैं ।

५. शिक्षा का भारतीय प्रतिमान

विधापीठ का मुख्य कार्य है शिक्षा का भारतीय प्रतिमान विकसित करना |

- इस प्रतिमान का शैक्षिक रूप है समग्र विकास | एकात्म मानव दर्शन इस प्रतिमान का वैचारिक आधार रहेगा और छात्र के व्यक्तित्व का समग्र विकास इसका शैक्षिक लक्ष्य रहेगा | समग्र विकास के दो पक्ष है|

१. सर्वांगी विकास अर्थात शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और चैतसीक (जिसे सामान्य रूप से आध्यात्मिक कहते हे) विकास| इसे उपनिषदों की भाषा मे अन्नमय, प्राणमय , मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोश का विकास कहते हे|

२. परमेष्ठीगत विकास अर्थात व्यक्ति का परिवार, समाज, देश, विश्व, सम्पूर्ण सृष्टी और यह सृष्टी जिससे नि:सृत हुई हे और जिसकी अभिव्यक्ति है उस परमेष्ठी के संदर्भ मे विकास |

- इस दिष्ट से जो करणीय कार्य होगे वे प्रमुख रूप से इस प्रकार के होंगे.....
- वर्तमान मे पढ़ाये जाने वाले विषयो की समग्र विकास संकल्पना के अनुरूप पुनर्रचना होगी|
- भारतीय पद्धति से अध्ययन, अनुसंधान एवं निरूपण होगा|

- अध्ययन, अध्यापन पद्धतियो में भी परिवर्तन होगा | इसके साथ मूल्यांकन पद्धति भी बदलेगी |

३. समग्र विकास की दृष्टि से वर्तमान मे पढ़ाये जाते हैं इसके अलावा और भी विषय, जैसे की गोविज्ञान, उधोग, संस्कृति एवं धर्म, भारतीय जीवनदृष्टि, योग, संस्कृत, गृहशास्त्र, अधिजननशास्त्र, आदि विषयो को पढाने की व्यवस्था विधापीठ मे की जाएगी |

४. इन सब विषयो का भारतीय स्वरूप बनाने के लिए अध्ययन, अनुसंधान, पाठ्यक्रमो की रचना, पाठ्य पुस्तकों का निर्माण और शिक्षकों का प्रशिक्षण आदि सब किया जाएगा |

संक्षेप में शिक्षा का समग्र विकास प्रतिमान विकसित करने एवं उसे व्यवहार्य बनाने हेतु एक महान शैक्षिक़ प्रयास की आवश्यकता रहेगी |

६. पुनरुत्थान साहित्य

पुनरुत्थान के कार्य की शुरुआत साहित्य निर्माण से ही हुई थी। पुनरुत्थान के साहित्य निर्माण की योजना कुछ इस प्रकार की चल रही है ।

- धर्मपाल समग्र:- प्रसिद्ध गाँधीवादी चिंतक डो. धर्मपालजी का संपूर्ण साहित्य अंग्रेजी में था उसको हिंदी और गुजराती में दस खंडों में प्रकाशित किया गया ।
- पुण्यभूमि भारत संस्कृति वाचनमाला:- कक्षा १ से १० तक के विद्यार्थिओं के लिए भारतीय संस्कृति के दस विषयों को लेकर दस लघु पुस्तिकाओं का लेखन और प्रकाशन किया । इस प्रकार की १०० पुस्तिकाओं का हिंदी, गुजराती मराठी में प्रकाशित किया गया है ।
- परिवार विषयक ग्रंथ:- बालक की प्रथम गुरु उसकी माता और प्रथम पाठशाला उसका घर है। भारतीय संस्कृति की ख़तम हो रही इस श्रेष्ठ परम्परा पुर्जिवित करने के लिए पांच ग्रंथों का प्रकाशन किया गया । १. गृहशास्त्र, २. अधिजननशास्त्र, ३. आहारशास्त्र, ४. गृहअर्थशास्त्र
- भारतीय शिक्षण ग्रंथमाला:- भारतीय शिक्षा की पुन:प्रतिष्ठा के हेतु से पांच ग्रंथों की इस ग्रंथमाला का प्रकाशन किया गया । १. भारतीय शिक्षा: संकल्पना और स्वरुप, २. भारतीय शिक्षा का समग्र विकास प्रतिमान, ३. भारतीय शिक्षा के व्यावहारिक आयाम, ४. भारतीय शिक्षा की वर्तमान और भावी संभावनाएं, ५. वैश्विक संकटों का समाधान: भारतीय शिक्षा।
- शिक्षा विषयक लघुपुस्तिकाएँ:- भारतीय शिक्षा का समग्र विकास प्रतिमान, भारतीय शिक्षा दर्शन, भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय शिक्षा का आर्थिक पहलु, भारतीय शिक्षा का व्यवस्थाकीय पहलु आदि आधारभूत विषयों की स्पष्टता के लिए हिंदी गुजराती दोनों भाषाओँ में पुस्तकें उपलब्द हैं।
- विविध अन्य साहित्य:- शिक्षा का आधार हमेशा राष्ट्रीय होता हैं राष्ट्र विषयक पुस्तकें जैसे दैशिकशास्त्र, भारत को जानो, विश्व को संभालो, विजय संकेत, कथारूप गीता, जैसी पुस्तिकाओं के साथ प्रज्ञावर्धन स्तोत्र, अभ्यासक्रम, प्रदर्शनी तथा चार्ट आदि प्रकाशित किये गएँ हैं।

७. पुनरुत्थान विद्यापीठ की योजना

शिक्षा के भारतीयकरण की यह प्रक्रिया इतनी सरल नहीं है न ही छोटी है। यह एक लंबी प्रक्रिया है। अनेक लोगों के योगदान से धीरज और कठिन परिश्रम की आवश्यकता होगी। इस कार्य में लगभग तीन पीढियां लग सकती है। साठ वर्ष का अनुमानित समय मानकर पांच चरणों में विभाजित किया गया है प्रत्येक चरण में १२ वर्ष । हमारे शास्त्रों में १२ वर्ष को एक ताप कहा जाता । अथ: पुनरुत्थान की इस योजना में पांच तापों की योजना हैं।

१.नैमिषारण्य:- महाभारत के युद्ध के बाद कुलपति शौनक के संयोजकत्व में ८८ हजार ऋषियों ने १२ वर्ष तक ज्ञान यज्ञ किया था। इसी प्रकार देश के विद्धवानों के साथ मिलकर १२ वर्ष तक विविध विषयों का भारतीय संदर्भ में अभ्यास, शोध, लेखन व प्रकाशन द्वारा भारतीय प्रतिमान तैयार करना।

२.लोकमत परिष्करण:- शिक्षा सर्वजनसमाज के लिए होती। इस हेतु सामान्यजन का प्रबोधन करना। नए प्रतिमान को स्वीकृत करवाना, लोकजीवन में चल रही गलत रुढियों, कुरिवाजों, अंधश्रद्धाओं के प्रति जाग्रति लाकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना।

३.परिवार शिक्षा:- व्यक्ति की शिक्षा उसके जन्म के पहले से शुरू हो जाती। यह उसके माता पिता के द्वारा मिलती हैं। माता प्रथम गुरु होती। संस्कार, चरित्र निर्माण, कुल-वंश परम्परा, कौशल-व्यवसाय परम्परा का वाहक परिवार होता। इसलिए परिवार शिक्षा को भारतीय शिक्षा के प्रतिमान का अनियार्य अंग माना गया हैं।

४.शिक्षक निर्माण:- देश के निर्माण में शिक्षकों का योगदान महत्वपूर्ण होता हैं क्योकि वही देश की भावी पीढ़ी का निर्माण करता है। जब तक त्यागी, कर्मनिष्ठ, ज्ञानसंपन्न और देशभक्त शिक्षक नहीं होंगे तबतक भारतीय शिक्षा केंद्र नहीं चल सकेंगें।

५.विद्यालयों की स्थापना:- प्रथम चार चरणों के ठीक से संपन्न होने के बाद पांचवां चरण बहुत ही सरल हो जायेगा। संपन्न शिक्षक देश के कोने कोने में भारतीय प्रतिमान के अनुसार विद्या केंद्र स्थापित करेंगे।

८. विद्यापीठ के विभाग

विद्यापीठ की सम्भावनाये तो अनन्त है | परन्तु हर बडे कार्य का प्रारम्भ छोटा ही होता है| इस सूत्र के अनुसार विद्यापीठ मैं प्रारम्भ मैं चार विभाग कार्यरत है|

१. अध्ययन एवं आनुसन्धान विभाग

- शिक्षा, संस्कृति, सभी सामाजिक सास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों मैं अध्ययन करना, अनुसन्धान करना, पठन पाठन सामग्री तैयार करना आदि कार्य इस विभाग मैं हो रहे है|

२. शिक्षकशिक्षा विभाग

- जब इस देश का शिक्षक आचार्या बनकर अपना उदाहरण प्रस्तुत कर छात्र का चरित्रनिर्माण और समाज को सुसंस्कृत बनाना अपना दायित्व मानेगा तब इस देश की शिक्षा स्वायत्त होगी| ऐसा शिक्षक निर्माण करने हेतु शिक्षकशिक्षा यह विद्यापीठ का दूसरा विभाग है|

३. परिवार शिक्षा विभाग

- व्यक्ति के आचार, विचार, वयवहार, कौशल, जीवनविषयक, द्रष्टिकोण आदि सभी की शिक्षा जन्म से भी पूर्व गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाती है| संस्कार एवं चरित्रनिर्माण घर मैं ही होता है| साथ ही गृहास्थधर्म के सम्यक् पालन से ही समाज की धारणा होती है| अत: विद्यापीठ मैं परिवार शिक्षा का विभाग शूरु हो गया है|

४. लोकशिक्षा विभाग

- समाज वर्तमान मैं शिक्षा विषयक अनेक भ्रान्त धारणाओं से ग्रस्त है| इस स्थिति मैं जो विनाश का मार्ग है उसे ही विकास का मार्ग मानता है| अत: समाज प्रबोधन करना विद्यापीठ का चौथा महत्वपूर्ण विभाग है| ये चरों विभाग एकसाथ कार्यरत है|

९. विधापीठ शैक्षिक मंच

- भारत मैं आज शिक्षा के, विद्या के, विचारों के, ज्ञान के क्षेत्र में दो धराये बह रही हैं|
- एक है पाश्चात्य धारा जिसे आधुनिक, वैश्विक, प्रगत कहा जाता है|
- और दूसरी है भारतीय धारा जिसे पुरातन, एकदेशीय, परंपरागत कहा जाता है|
- प्रथम धारा ऐसी है जो अनेकानेक अवरोधों के बावजूद संस्कार और संस्कृति को अपनाने हेतु जनमानस को अन्दर से प्रेरित करती है, परन्तु यह अधिकृत नहीं है और देश इससे नहीं चलता|
- आवश्यकता इस भारतीय धारा को अधिकृतता प्रदान करने की है|
- आज भी देशभर मैं ज्ञान और संस्कृति की इस धारा को जीवित रखने और पृष्ट बनाने का प्रयास अनेकानेक व्यक्ति, संस्थाएं और संगठन कर रहे है|

- पुनरुत्थान विद्यापीठ इन सभी प्रयासों को विचार, कार्यक्रम, कार्य, अनुभव आदि के आदानप्रदान हेतु, परस्पर लाभान्वित होने और करने हेतु एक मंच प्रदान करेगा|
- साथ ही ऐसे व्यक्ति, संस्था और संगठनों को परस्पर सुविधा, आवश्यकता एवं अनुकूलता के अनुसार अपने साथ जोडने का कार्य भी करेगा|
- जो भारतीय है उसे भारत मैं अधिकृत बनाने हेतु और विश्व को उसका लाभ पहुँचाने हेतु यह प्रयास होगा|

संदर्भ सूचि:

१. काटदरे, इंदुमति(२०१८). शिक्षा का समग्र प्रतिमान, भारतीय शिक्षा ग्रंथमाला-२ , 'ज्ञानम' ९/बी, आनंदपार्क, जूनाढोर बाजार, कांकरिया रोड, अमदावाद-३८०००२८

२. www.punarutthan.org